International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 5; September 2018; Page No. 26-27

मंगलेश डबराल की कविता में यथार्थ का चित्रण

पी. ए. देवस्या
असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सेन्ट जोसफ्स कालेज, देवगिरी, कोष़िकोड, केरल, भारत।

सारांश
मंगलेश डबराल की काव्ययात्रा विशेष रूप में सामाजिक यथार्थता से ही शुरू होती है। किसी भी साहित्यकार की साहित्य सामाजिक यथार्थ से असंपृक्त और अप्रभावित नहीं रह सकता। बेकारी, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता आदि का चित्रण आज की कविता में खूब देखने को मिलता है। समकालीन हिन्दी कवियों ने ग्राम्य जीवन के यथार्थ चित्रण के साथ ही साथ नागरिक जीवन के विभिन्न अंगों, रूपों और विद्रूपताओं एवं विसंगतियों का भी विस्तृत अभिव्यक्ति दी है। शोषित वर्ग के बाद समाज के सबसे बडा वर्ग मध्यवर्ग है। यह मध्यवर्ग वर्तमान पूँजीवादी समाज व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है जो शोषकों और शोषितों के बीच त्रिशंकू की तरह स्थित है, यह यथार्थ चित्रण डबराल की कविता में देख सकते हैं।
डबराल की कविता में साधारण जनता की दुख-दर्द, बेचैनी, पूँजीवादी विसंगतियाँ, निम्न तथा मध्यवर्गीय जीवन की तमाम सच्चाइयाँ आदि आते हैं। उन्होंने उन विसंगतियों पर द्यातक प्रहार तथा समाज सुघार का सार्थक प्रयास भी किया है। उनकी अधिकांश रचनायें समाज की सच्चाइयों और यथार्थ से भरा हुआ है। उनके काव्य की मुख्य चिंता है कि भूख और तडप से मनुष्य के अन्दर व्यवस्था के विरुद्ध जो गुर्राहट उभरनी चाहिए वह मंद क्यों हो जाती है। वास्तव में लोग अंधेरे में हाँफते हुए ही चुपचाप चले जाते हैं, औरतें डरी डरी अपना डर छुपाती निकल जाती हैं। उनकी रचनायें अपने अनुभव पर आधारित होने के कारण उनमें जीवंतता झलकती है। उन्होंने जीवन के अनुभव को ही अर्थात कटुसत्य को निर्दयता के साथ निर्भय होकर सामाजिक व्यवस्था का चित्रण किया है। मंगलेश समाज का अत्याचार, अन्याय, कुंठा, शोषण, हिंसात्मक कृत्य, बाज़ारवाद आदि का चित्रण समाज के सम्मुख रखते हैं। आज समाज काफी बदल चुका है। पूरी दुनिया में बाज़ारवाद हावी है, जहाँ मनुष्य का न सम्मान है, न उसके रिश्तों का। इन सभी बातें पर खेद करने हुए कवि एसी परिस्थितियों पर नितांत चिंतन-मंथन करते हुए समस्या का समाधान ढूँढने का प्रयास और साथ ही समाज को जगाने का प्रयत्न भी करते हैं।

मूल शब्द : समकालीन हिन्दी कविता और मंगलेश डबराल।

प्रस्तावना
'मंगलेश डबराल' की कविता में 'यथार्थ का चित्रण' नामक शोध-पत्र में मानवीय जीवन के यथार्थ को उनके साहित्य के द्वारा अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है। वे आम आदमी की पीड़ा, टूटे सपनों, जीने की विवश स्थितियों को यथार्थता के साथ चित्रित करने वाला समकालीन कवि हैं।

समस्या
- मंगलेश डबराल की कविता में शोषण की समस्या का चित्रण है।
- मंगलेश डबराल की कविता में मध्यवर्गीय ज़िन्दगी की समस्या का चित्रण है।
- मंगलेश डबराल की कविता में संघर्ष की समस्या देख सकते हैं।
- मंगलेश डबराल की कविता में करुणा, दुख, अवसाद, संत्रास निराशा आदि का चित्रण।
- मंगलेश डबराल की कविता में शहरी जीवन की समया विद्यमान है।

उद्देश्य
साहित्य का अनिवार्य गुण है उद्देश्यमूलकता। संसार के किसी की देश के साहित्य के लिए ज़रूर कुछ उद्देश्य होता है। साहित्य को जन्म देने वाला मनुष्य का भावजगत उसके उद्देश्यमूलक क्रिया-व्यापार का ही प्रतिफलन है। प्रिय वस्तुओं के प्रति अनुराग तथा अप्रिय वस्तुओं के प्रति विराग की भावना भी उद्देश्यमूलकता का ही परिणाम है।
कवि डबराल ने शोषक के खिलाफ लडने की चेतावनी अपनी कविता के माध्यम से दी है। वे कहते हैं कि देश की उन्नति केलिए शोषण से छुटकारा पाना चाहिए जिसके लिए इसके विरुद्ध आक्रोश करना चाहिए। उनके "पहाड पर लालटेन" में 'लालटेन' संघर्ष का प्रतीक है। कवि 'लालटेन' के माध्यम से लोगों के मन में मुक्ति के संघर्ष का बीज बोना चाहता है। उसके प्रकाश से शोषण रूपी अंधकार सदा केलिए अंत कर देना वह चाहता है। कवि अपनी कविता के माध्यम से शोषित-पीडित व्यक्ति का चित्रण करते हैं-

> "देखो भूख से, बाढ से, महामारी से मरे हुए
> सारे लोग उभर आये हैं चट्टानों पर"[1]

इस कविता संग्रह में मध्यवर्ग की करुण कथा का चित्रण एवं उनपर जो शोषण चल रहा है उसका जीवंत चित्रण भी डबराल ने किया है। कवि सोझते हैं कि हमारे देश का अधिकांश लोग मध्यवर्ग का है।

उन्होंने अपनी कविता में पहाडी प्रदेश के लोगों को अपनी कविताओं के केन्द्र बनाया। हम उनकी कविताओं में निम्न मध्यवर्ग की मानसिकता का चित्रण देख सकते हैं। दूर दूर तक नौकरी की तलाश में अपने सगे संबंधियों को छोडने वाले पुत्रों की चिट्टी की प्रतीक्षा कर निराश के साथ लौटनेवाले मध्यवर्गीय पिता वा चित्रण हमारे दिल को काटनेवाला है-

"दिन भर लकडी ढोकर माँ आग जलाती है
पिता डाकरवाने में चिट्ठी का इंतज़ार करके
लौटते हैं हाथपाँव में
दर्द की शिकायन के साथ
रात में जब घर काँपता है
पिता सोचते हैं जब मैं नहीं हूँगा
क्या होगा इस घर का"[2]

मंगलेश डबराल की एक विशेषता यह है कि वे मानव जीवन के जीवन संघर्ष को चित्रित करते हैं। अलग अलग परिस्थितियों और विरोधी परिस्थितियों में रहने के कारण मानव को शोषण के खिलाफ संघर्ष करना पडता है। यह संघर्ष कवि अपने अनुभव के रूप में चित्रित करते हैं क्योंकि वे जीवन संघर्ष के साथ ही जी रहे हैं।
कवि शोषक के खिलाफ क्रांति का आह्वान और शोषित की संघर्ष क्षमता की और संकेत करते हुए कहते हैं-

"खून की खामोशी को छेदती हुई
एक छटपटाहट है जिसके पार
चिटिया घूमती दिखती है।"[3]

मंगलेश की अधिकांश कविताओं में करुणा, अवसाद, और दुख दर्द देख सकते हैं। अकेला आदमी, स्त्री, परछाई, मकान, थकान, दुस्वप्न, चिडिया आदि सभी कवितायें विभिन्न प्रकार के दुखों का सविस्तार वर्णन है जिसे पढकर पाठक की चेतना में एक महाकरुणा की जागृती होती है।
अकेली लडाई से कुछ न बदलने के कारण निराशा और अवसाद में डूबे हुए आदमी का चित्रण वे करते हैं-

"शाम को सारी दुनिया झाडकर
बिस्तर पर
औंधा होकर अंत में
क्या बचता है कंधे पर बैठे दुख के अलावा
आत्मा पर फफूंद के अलाव क्या बचता है
अंत में"[4]

निष्कर्ष

हम यह निसन्देह कह सकते हैं कि मंगलेश डबराल ने जीवन का यथार्थ चित्रण अपनी कविताओं के माध्यम से बहुत सुन्दर रूप में चित्रित किया है तीन कारणों से वे एक महत्वपूर्ण कवि हैं। पहला कारण यह है कि उन्होंने बडी सावधानी से अपनी कविताओं को विचारधारा के आरोपण से बचाया है। दूसरा कारण यह है कि उन्होंने अनेक बार संकेतों से भी काम लिया है और तीसरा कारण यह है कि उन्होंने सब से मुक्त होकर जीवन यथार्थ की कविता लिखी है।

संदर्भ

1. मंगलेश डबराल- पहाड पर लालटेन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- 2014, पृ. 64
2. मंगलेश डबराल- पहाड पर लालटेन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली- 2014, पृ.19
3. मंगलेश डबराल- हम जो देखते हैं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.12
4. मंगलेश डबराल- घर का रास्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.9
5. विश्वम्भर मानव- आधुनिक कवि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नई दिल्ली, प्रथम पुनर्मुद्रित संस्करण-2011, पृ.351
6. डॉ. श्रीमती विद्यावती जी राजपूत- मंगलेश डबराल व्यक्तित्व एवं कृतित्व अभय प्रकाशन, आवास विकास, कानपूर, पृ.47
7. डॉ. उमेश अशोक शिंदे- समकालीन हिन्दी कविता और मंगलेश डबराल- चन्द्रलोक प्रकाशन, मयूर पार्क वसंत विहार, कानपूर, पृ.127
8. नन्द किशोर नवल- हिन्दी कविता अभी, बिलकुल अभी, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ.113